Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

पर्यावरणी मनोविज्ञान

प्रा. कच्छी पार्वती के*

पर्यावरणी मनोविज्ञान का प्रादुर्भाव :

पर्यावरण व्यक्ति को प्रभावित करता है। यदि हम इस उक्ति के अध्ययन में अधिक अभिरुचि दिखाने वाले वैज्ञानिको का नाम ले तो उसमें डॉ. एलेन बेलबाई (१९५३) जो एक फ्रेंच फिज़िशियन का नाम सबसे ऊपर में जाता है। इनका सिध्धांत था कि नाव या जहाज पर समुद्र में बहुत दिनों तक बिना सामान्य भोजन या पानी के जीवित रह सकता है। वह समुद्र मे होने पर मछलियों को खाकर तथा समुद्र का पानी पीकर अपने आप को जीवित रख सकता है। उनके इस दावे के कारण लोंगो ने उन्हे मूर्ख तक कहा क्योंकि यह सर्वविदित है कि व्यक्ति न तो समुद्र का पानी पीकर तथा बीच समुद्र में मछली पकडकर उसे सीधा खाकर जीवित रह सकता है। परंतु बेलबाई आम लोंगो के इस सामान्य विचार को गलत साबित करने के लिए एक छोटे से रक्षा नौका में विशाल समुद्र की और चल पड़े। वे करीब ६५ दिनों तक अपनी समुद्री यात्रा पर रहकर लौटे और लोंगो को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने अपने इस यात्रा के दौरान होने वाले कठिनाईयों का विस्तृत वर्णन किया जिसमें उन्होंने भूख और प्यास को मिटाने के लिए समुद्री मछलियों तथा समुद्र का पानी पीने तक का वर्णन किया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से उस वर्णन में जो महत्वपूर्ण पहलू था, वह यह था कि उनका व्यवहार समुद्र के एकाकी वातावरण से काफी प्रभावित हुआ। समुद्र के अलगाव या एकाकीपन तथा उसके तनहाई का उनके व्यवहार पर काफी प्रभाव पडता देखा गया। बेलबाई के व्यवहार पर काफी अधिक प्रभाव पडता है। अन्य लोंगो जैसे – स्टोकम (१९४८), बर्नी (१९४४) तथा बायर्ड (१९३८) ने भी अपनी यात्राओं में इस तरह की अनुभूतियो का जिक्र किया है। यहीं से मनोवैज्ञानिको में पर्यावरण के विभिन्न पहलुओ तथा उसके मानव व्यवहार पर पडने वाले प्रभावों के अध्ययन की और जुकाव बढ़ने लगा।

१९६० वाले दशक में कर्ट लेविन, अल्ट्मैन बैल, फिशर तथा लूमिस तथा स्टोकोल्स, वार्कर के प्रयासों से पर्यावरण तथा व्यवहारो के अध्ययन के लिए एक नया विज्ञान का प्रादुर्भाव होने लगा जिसे आगे चलकर पर्यावरणीय मनोविज्ञान के नाम से जाना गया। इस दशक के अन्य शोधकर्ताओने भी भौतिक पर्यावरण का व्यक्ति के व्यवहार पर पडनेवाले प्रभावों के अध्ययन के प्रति अपनी – अपनी संवेदनशीलता दिखलाया।

पर्यावरणी मनोविज्ञाननी परिभाषा :

"पर्यावरणी मनोविज्ञान व्यवहार तथा निर्मित एवं स्वाभाविक पर्यावरण के अंतरसंबंध का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।"

- बेल, फ्रेजर तथा भूमिस – १९७८

---

*प्रा. कच्छी पार्वती के.,श्री देवमणी आर्ट्स एण्ड कोमर्स कोलेज,विसावदर – ३६२१३० (गुजरात)

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

स्टोकोल्सने यह बतलाया है कि मानव – पर्यावरण अंत:क्रिया के सामान्य अध्ययन के क्षेत्र में पर्यावरणी मनोविज्ञान, मौलिक मनोविज्ञानिक प्रक्रियाओं तथा वैयक्तिक एवं सामूहिक स्तर के

विशलेषणो पर अधिक बल डालता है । इस बल के साथ-ही-साथ कुछ ऐसी विशेषताएँ एवं उन्मुखताए भी है इन विशेषताओं एवं उन्मुखताओ में निम्नांकित प्रमुख है –

- क्रमबध्धता दृष्टीकोण
- समस्या उन्मुखता
- अंतशास्त्रीय बल
- सामाजिक - मनोवैज्ञानिक संदर्भ

स्टोकोल्स (१९७८) ने यह स्पष्ट किया है कि पर्यावरणी मनोविज्ञान में आज पर्यावरण तथा व्यवहार के बारे में क्या अध्ययन हो रहे है, इसे जानने के लिये कम-से-कम दो क्षेत्रो के बारे में जानना आवश्यक है ।

(1) मानव स्थानिक व्यवहार :

(a) व्यक्तिगत स्थान में अंतरंग क्षेत्र, व्यक्तिगत क्षेत्र, सामाजिक स्थानगत क्षेत्र, सार्वजनिक दूरी क्षेत्र इत्यादि । व्यक्तिगत स्थान का महत्व सामाजिक अन्त:क्रियाओं में काफी अधिक है । व्यक्तिगत स्थान का विकास, व्यक्तिगत स्थान को प्रभावित करनेवाले कारक जैसे यौन, आयु, प्रजाति एवं संस्कृति, व्यक्तिगत, शिलगुण, लक्ष्य व्यक्ति के साथ संबंध के प्रकार व्यक्तिगत स्थान को प्रभावित करते है । व्यक्तिगत स्थान के अतिक्रमण के प्रति प्रतिक्रिया : तनाव, समायोजन.

(b) प्रादेशिकता :

प्रादेशिकता एक ऐसा संप्रत्यय है जिसे पशु व्यवहार पर किये गए शोधों से लिया गया है । जिसमे प्रादेशिकता के प्रकार (।) प्राथमिक क्षेत्र (।।) गौण क्षेत्र (।।।) सार्वजनिक क्षेत्र प्रादेशिकता का पर्यावरणी मनोविज्ञान मे इतना अधिक महत्व इसलिए है, क्योंकि इसके द्वारा निम्नांकित छह तरह के कार्य किये जाते है ।

- प्रादेशिकता से सामाजिक अनुक्रिया मे मदद मिलती है ।
- प्रादेशिकता सामाजिक संगठन को विकसित सुस्पष्ट एवं संयोजित करने में मदद करता है ।
- प्रादेशिकता गुप्ति का नियमन करने में भी मदद करता है ।
- प्रादेशिकता से सामूहिक तथा व्यक्तिगत पहचान बनती है ।
- प्रादेशिकता से मनुष्यों को सुरक्षा मिलती है ।
- प्रादेशिकता पशु व्यवहार को नियमित एवं नियंत्रित करता है ।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

(c) जनसंकुलन :

जनसंकुलन से व्यक्ति मे मनोवैज्ञानिक स्थिति होती है । जनसंकुलन एव तरह का नकारात्मक मनोवैज्ञनिक अनुक्रिया है । इसमे व्यक्ति का कार्य निष्पादन, अंतवैयक्तिक संबंध तथा स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित होता है । जनसंकुलन के प्रति होने वाले प्रभावों को निम्नांकित प्रमुख शीर्षकों के तहत बाँट कर अध्ययन किया गया है ।

- जनसंकुलन का मनोवैज्ञानिक तथा दैहिक प्रभाव ।
- जनसंकुलन का अंतवैयक्तिक आकर्षक पर प्रभाव :
- प्रतिसामाजिक व्यवहार तथा आक्रमकता पर जनसंकुलन का प्रभाव ।
- कार्य नियपादन पर जनसंकुलन का प्रभाव ।

जनसंकुलन के प्रभाव अधिकतर नकारात्मक होते है, इसलिए पर्यावरणी मनोवैज्ञनिको ने कुछ ऐसे सुजाव दिये है जिनके आधार पर उसके प्रभाव को नियंत्रित किया जा सकता है । यध्यपि यह सही है कि इनमें से कोई भी सुजाव अकेले ऐसा नहीं है जो जनसंकुलन के नकारात्मक प्रभाव के लिए संपूर्ण उपचार साबित हो । पर्यावरणी मनोवैज्ञनिको द्वारा जनसंकुलन के विभिन्न सिध्धांतो का वर्णन किया गया है जिसमे (a) अतिभार सिध्धांत (b) नियंत्रण सिध्धांत (c) गुणारोपण सिध्धांत जनसंकुलन के विभिन्न सिध्धांतो एवं संबंधित शोधो को ध्यान में रखते हुए तब यह कहा जा सकता है कि उच्च सामाजिक धनत्व अपने आप मे एक दुखद कारक नहीं है । परंतु जब उच्च सामाजिक धनत्व का संबंध कुछ विशेष कारको जैसे अतिउत्तेजक, व्यक्तिगत नियंत्रण में कमी तथा व्यक्तिगत स्थान के अतिक्रमण आदि से संबंधित होता है, तो उससे निश्चित रूप से व्यक्ति में जनसंकुलन के भाव को उत्पति होती है ।

(d) अलगाव :

अलगाव का प्रभाव मानव व्यवहार पर काफी पड़ता है । मानव व्यवहार पर अलगाव के पड़ने वाले प्रभावों के बारे में जानकारी के दो स्त्रोत है । (a) नाविकों एवं गवेषको द्वारा लिखित आत्मकथाओ का विश्लेषण । (b) अलगाव पर किये गए प्रयोगात्मक अध्ययन ।

(2) व्यवहार पर पर्यावरणी प्रभाव :

व्यवहार पर पर्यावरणी से संबंधित कारको का प्रभाव पड़ता है, ऐसे कारको अस्थानगत पर्यावरणी कारक कहा जाता हैं | मनोवैज्ञानिको ने ऐसे दो कारको का वर्णन किया है ।

(a) व्यवहार पर आवाज का प्रभाव :

कई मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गए अध्ययनो से यह स्पष्ट हुआ है कि आवाज का प्रभाव तनावपूर्ण होता है । जब व्यक्ति को उच्चतीव्रता की आवाज को सुनना पडता है, तो वे दैहिक रुप से अधिक उत्तेजित हो जाते है और उनके व्यवहार मे चिडचिडापन एवं आक्रमकता में वृद्धि हो जाती है । आवाज पर

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

किये शोधो से यह स्पष्ट हुआ है कि आवाज उत्तेजक होता है । अपने आप मे आवाज व्यक्ति को पर्यावरण की वस्तुओं की ओर ध्यान केन्द्रित करने मे बाधक होता है परंतु उसका उत्तर प्रभाव काफी खतरनाक होता है । खासकर जब आवाज का स्वरुप अपूर्वकथनीय तथा अनियंत्रिण योग्य होता है, तो उसका दुष्परिणाम और भी अधिक स्पष्ट होता है ।

(b) व्यवहार पर मौसम का प्रभाव :

- तापक्रम : मौसम मे एक महत्वपूर्ण कारक तापक्रम है जिसका मानव व्यवहार पर काफी स्पष्ट प्रभाव पडता देखा गया है ।

- वायु प्रदूषण : वायु प्रदूषण का भी प्रभाव मानव व्यवहार पर पडता देखा गया है । वायु प्रदूषण एक ऐसा सर्वव्यापी समस्या है जिसका प्रभाव सार्वजनिक रुप से लगभग सभी व्यक्तियों पर पडता देखा गया है । इस सलक्षण में जलन तथा आंत्र समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है । आधुनिक विशेषज्ञो का मत है कि करीब ६० से ९०% तक व्यक्तियों में होने वाले कैन्सर का कारण किसी न किसी प्रकार का प्रदूषण ही होता है ।

- ऋणात्मक आयन: रोशनी, हवा तथा वायु मंडलीय कारको के कारण हवा कें अणु घनात्मक एवं ऋणात्मक रूप से आवेशित आयन्स में बँट जाते है । मनोवैज्ञानिकों का मत है कि वायुमंडलीय बिजली की मात्रा से सामाजिक व्यवहार प्रभावित होता है ।

- ओजोन : ओजोन धूम – कोहरा का एक विषिष्ट प्रकार है जो औध्योगिक अवशेष तथा मोटर या कार नीस्सरण आदि से बनता है । वायुमंडल में ओजोन स्तर ऊँचा होता है तो पारिवारिक क्षुब्धता बढ़ जाती है ।

- चन्द्र चक्र : चन्द्र चक्र का भी प्रभाव व्यवहार पर पड़ता है । मानव शरीर की संरचना के तत्व पृथ्वी की संरचना के तत्व के ही समान है अर्थात ८०% जल तथा २०% कार्बनिक तत्व तथा अकार्बनिक तत्व । अगर चन्द्रमा समुद्र के पानी में परिवर्तन ला सकता है, तो वह शरीर के भीतर के द्रव्यो मे भी परिवर्तन ला सकता है।

-

पर्यावरणीय शिक्षा :

पर्यावरणीय समस्याओं के स्वरूप तथा मानव जाति पर पडनेवाले उसके प्रभावों की जानकारी देने हेतु उन्हें इस प्रकार के वैकल्पिक व्यवहारों को करने का सुजाव दिया जाता है जिसकी सहयता से पर्यावरणीय समस्याओं को एक स्तर तक कम अथवा दूर किया जा सके । शिक्षा के कारण व्यक्तियो मे पर्यावरण के सम्बन्ध में जानकारी बढ़ेगी, उनकी अभीवृत्ति में परिवर्तन होगा जिससे उनमें पर्यावरण की दृष्टि से अपेक्षाकृत घनात्मक व्यवहार अधिक होंगे।

पर्यावरणीय अनुबोधन :

पर्यावरण के संदर्भ में अनुबोधन वास्तव में पूर्ववर्ती व्यवहार परिवर्तन की एक विधि है जिसका उपयोग लक्ष्य व्यवहार के तत्काल पूर्व किया जाता है । अनुबोधन दो प्रकार के होते है । (।) ग्राह्य अनुबोधन (।।) त्याज्य अनुबोधन । ग्राह्य अनुबोधन के उपयोग के परिणाम स्वरूप अनुकूल कार्य करने की संभावना में

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

वृद्धि होती है तथा इस प्रकार के व्यवहार करने से आर्थिक अथवा अनार्थिक प्रोत्साहन मिलता है । त्याज्य अनुबोधन के उपयोग के फलस्वरूप प्रतिकूल कार्यों के करने की संभावना में कमी आती है ।

पुनर्बलन विधि :

पर्यावरणीय विध्वंसात्मक व्यवहारो में आवश्यक परिमार्णन हेतु पुनर्बलन विधियों का उपयोग किया जाता है । पुनर्बलन का उपयोग व्यवहार घटित होने के बाद किया जाता है । इसके अंतर्गत घनात्मक तथा ऋणात्मक पुनर्बलन के अतिरिक्त दण्ड तथा पुनर्निवेशन की विधियों का उपयोग करते है ।

(।) विधेयात्मक पुनर्बलन :

पर्यावरणीय रचनात्मक व्यवहारों को प्रोत्साहित करने हेतु किया जाता है । पुनर्बलन विधि के अंतर्गत इस प्रकार के पुनर्बलनो का सर्वाधिक उपयोग किया गया है ।

(।।) ऋणात्मक पुनर्बलन :

विधेयात्मक पुनर्बलन की तुलना में पर्यावरणीय निर्दिष्ट व्यवहारों के लिए निषेधात्मक पुनर्बलन तथा दण्ड का उपयोग अपेक्षाकृत कम किया गया है । सामान्यतया निषेधात्मक पुनर्बलन के अंतर्गत दु:खद परिस्थितियो से परिहार की बात की गयी है, जबकी दण्ड के अंतर्गत विकर्षणात्मक तत्व को समाहित किया गया है ।

पुनर्निवेश :

व्यक्ति के द्वारा किये गये व्यवहार की सफलता अथवा असफलता पर आधारित क्रमश: विधेयात्मक अथवा निषेधात्मक पुनर्निवेश हो सकता है । इस प्रकार पुनर्निवेश में विधेयात्मक पुनर्बलन अथवा दण्ड अंतर्निहित हो सकता है ।

संदर्भसूची :

1. प्रेम सागरनाथ तिवारी : पर्यावरणीय मनोविज्ञान
अरुणकुमार सिंह : समाज मनोविज्ञान की रुपरेखा